








**Hon'ble Shri Arun Singh Rawat, IFS**  
**Director General**  
 Indian Council of Forestry Research & Education Dehradun  
**Date : 1 March 2023**  
**BRAIN STORMING ON FORESTRY RESEARCH**  
**PRIORITIES IN EASTERN U.P.**



**ICFRE-ECO REHABILITATION CENTRE**  
 3/1, Lajpat Rai Road, New Katra, Prayagraj -211002

## VISIT OF DG, ICFRE AT ICFRE- ERC PRAYAGRAJ

Sh. Arun Singh Rawat, Director General, Indian Council of Forestry Research and Education, Dehradun, the highest officer of forestry research in India visited ICFRE-Eco Rehabilitation Centre, Prayagraj and Chaired “Brainstorming on Forestry Research Priorities in Eastern Uttar Pradesh” on 1<sup>st</sup> March 2022 in the newly designated ‘Saraswati Sammelan Kaksh’ of the Centre.



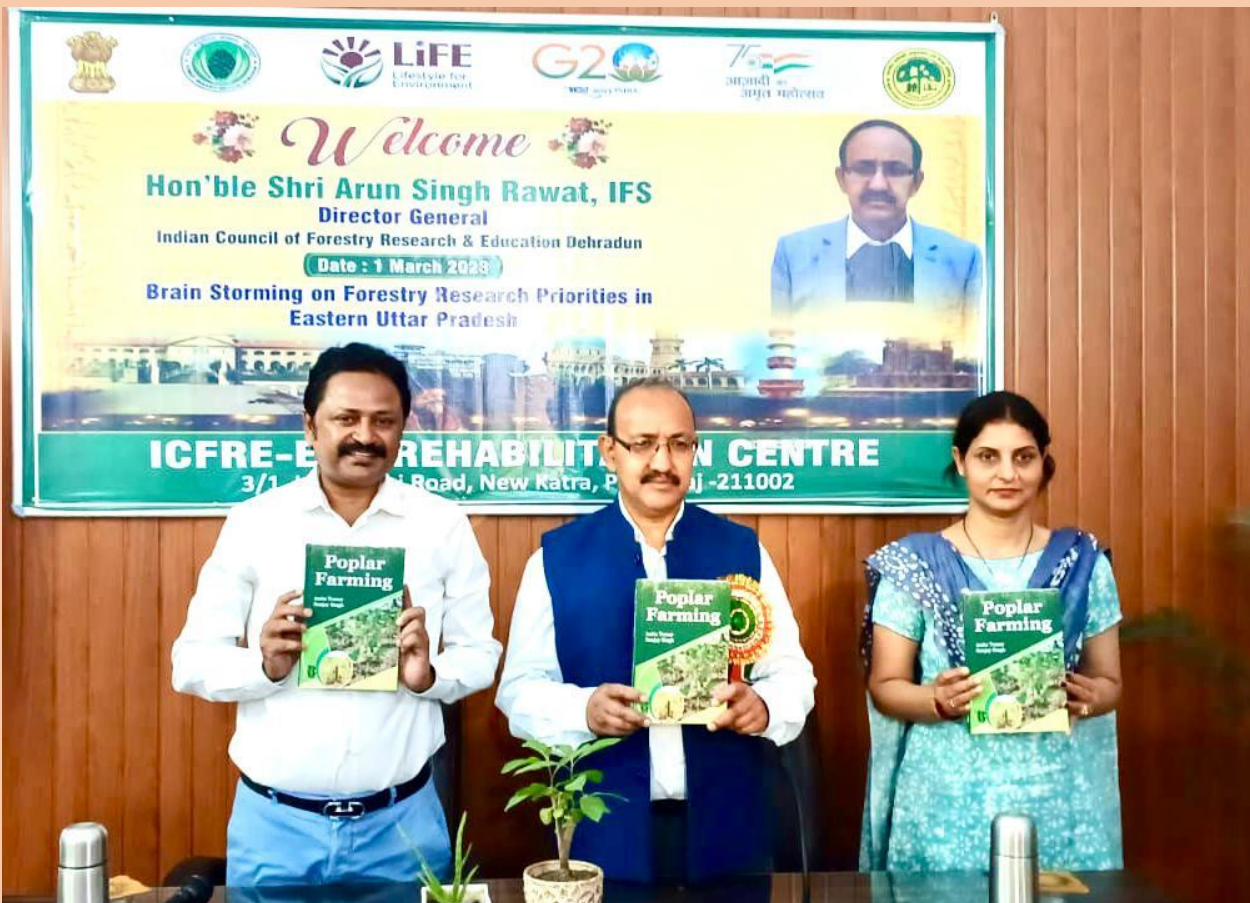
Dr. Sanjay Singh, Head ICFRE-ERC while welcoming the dignitaries present, gave information about the new research schemes started by the Centre in different districts of UP which include identified suitable clones of Eucalyptus, Poplar and *Melia Dubia*, introduction and trials of Agar (*Aquilaria malaccensis*) and new bamboo species from North East, promotion of sandalwood cultivation etc.



In his keynote address DG ICFRE called upon the research institutions' to have efficient coordination with the state forest department and industries necessary for carrying out solution based high priority research to make an impact. Director General also released a book entitled "Poplar Farming" by Anita Tomar and Sanjay Singh on the occasion. In this connection he briefed the print and electronic media sequence that a MoU was being signed between State Forest Department UP and Forest Research Institute, Dehradun with the objective to promote forestry and increase farmer's income in the State.

Later Sh. Rawat inaugurated the newly constructed 'Forestry Training Facility' for the farmers and Bambusetam at the Central Nursery, Padila. He congratulated the Centre for establishing Uttar Pradesh's largest bamboo garden, enriched by 42 bamboo species from all over India. Apart from Forest officials and academicians, senior scientists of the center Dr. Anita Tomar, Dr. Kumud Dubey, Sh. Alok Yadav, Dr. Anubha Srivastava along with officials, staff and scholars attended the programme.







# हिन्दुस्तान

## पौधशाला में मिलेंगी बांस की 42 प्रजातियां

### गोष्ठी

प्रयागराज वरिष्ठ संवाददाता। वन अनुसंधान केंद्र की ओर से बांस की 42 प्रजातियों की केंद्रीय पौधशाला का लोकार्पण बुधवार को किया गया। पड़िला में तैयार यह पौधशाला प्रदेश की पहली ऐसी पौधशाला होगी, जहां इतनी प्रजातियों के बांस मिलेंगे। अनुसंधान के महानिदेशक व वन अनुसंधान संस्थान समविश्वविद्यालय देहरादून के कुलाधिपति अरुण सिंह रावत ने इसका लोकार्पण किया। इससे पहले पहले नया कटरा स्थित कार्यालय में गोष्ठी का आयोजन किया गया।

उन्होंने कहा कि आज किसानों की आय को बढ़ाने के लिए नई तकनीकों का इस्तेमाल करना होगा। ऐसे में हमें जरूरत है कि वन विभाग से बेहतर समन्वय बनाएं। ऐसे स्थल जहां पर पौधों को रोपा जा सकता है, वहां के लिए जमीन तैयार करें। जरूरत पड़ने पर पेड़ की बीमारी, मिट्टी की गुणवत्ता की जांच की जाए। केंद्र प्रमुख डॉ.



भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं पारी पुनर्स्थापन संस्थान में आयोजित गोष्ठी में महानिदेशक को पौधा देते डॉ. संजय सिंह। • हिन्दुस्तान

### फॉर्मिंग पुस्तक का किया विमोचन

प्रयागराज। महानिदेशक एएस रावत ने संस्थान के प्रमुख डॉ. संजय सिंह व डॉ. अनीता तोमर की पुस्तक का विमोचन किया। पुस्तक में नई तकनीक पर विस्तार से बताया गया है।

संजय सिंह ने मौजूद लोगों को नवीन शोध योजनाओं की जानकारी दी, जिनमें अगर, चंदन, पूर्वोत्तर से लाई गई बांस की नई प्रजातियों जिसमें मीलिया डूबिया, यूकेलिप्टस व पापलर आदि के क्लोन प्रमुख रहे। कार्यक्रम में

केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, डॉ. कुमुद दूबे, आलोक यादव, डॉ. अनुभा श्रीवास्तव, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. एसडी शुक्ला, रतन गुप्ता आदि मौजूद रहे। पौधशाला में ये हैं प्रमुख

- पड़िला में तैयार प्रदेश की पहली पौधशाला का महानिदेशक ने किया लोकार्पण
- कृषि वानिकी को बढ़ाने के लिए वन विभाग से समन्वय : अरुण सिंह रावत

### महानिदेशक ने निरीक्षण कर जानी समस्या

महानिदेशक ने बुधवार को संस्थान का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने शोधार्थियों से उनकी समस्याओं व शोध के बारे में जानकारी ली। सभी को आश्वस्त किया कि जो भी जरूरतें हैं, उसे पूरा कराया जाएगा। महानिदेशक ने कहा कि वैज्ञानिकों की कमी कभी भी शोध में बाधा नहीं बनेगी।

प्रजातियां: केंद्रीय पौधशाला में आसाम के बंबुआ हेमिलटोनी और डुलूवा, त्रिपुरा के ओलेवरी और पॉलीमॉर्फा, मध्य प्रदेश से मीठा बांस, केरल के ऑकलैंडा और अफ्रीका के नाइग्रा आदि बांस के पौधे लगाए गए हैं।

## पेड़ों की खेती से दोगुनी होगी आय

जागरण संवाददाता, प्रयागराज : पूर्वांचल में फसलों के साथ पेड़ों की खेती की जा सकती है। यहां की मिट्टी इसके लिए उपयुक्त है। पेड़ों की खेती (कृषि वानिकी) करके किसान अपनी आय दोगुनी कर सकते हैं। इस तरह की खेती पश्चिमी यूपी, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा और गुजरात के किसान कर रहे हैं। ये बातें भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के महानिदेशक अरुण सिंह रावत ने कही। उन्होंने कहा कि पेड़ों की खेती से किसानों के आय बढ़ने के साथ ही पर्यावरण भी प्रदूषणमुक्त होगा।

कृषि वानिकी के प्रति किसानों को जागरूक करने के लिए बुधवार को पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र लाजपत राय मार्ग न्यू कटरा में



भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के महानिदेशक अरुण सिंह रावत • जागरण

संगोष्ठी हुई। इसमें मुख्य अतिथि अरुण सिंह रावत ने कहा कि कई राज्यों के किसान कृषि वानिकी से अच्छी कमाई कर रहे हैं। इसके लिए बगीचा बनाने की जरूरत नहीं है। खेती के साथ ही मेड़ पर या कुछ मीटर के अंतर पर इसे लगा सकते हैं। उन्होंने कहा कि पूर्वांचल के

किसान यूकेलिप्टस, पापलर, गम्हार, मीलिया डूबिया, चंदन आदि की खेती करके आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं। केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने बताया कि कृषि वानिकी के लिए किसानों को लगातार जागरूक किया जा रहा है। महानिदेशक ने वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा पापलर फॉर्मिंग पर आधारित पुस्तक का विमोचन किया। इसके बाद उन्होंने पड़िला में तैयार की केंद्रीय पौधशाला का लोकार्पण किया। पौधशाला में बांस की 42 प्रजातियां तैयार की गई हैं। उत्तर प्रदेश की यह सबसे बड़ी बांस वाटिका है। इस मौके पर वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. अनीता तोमर, डा. कुमुद दूबे, आलोक यादव, डा. अनुभा श्रीवास्तव, डा. एसडी शुक्ला, रतन गुप्ता, अंकुर रहे।

